जिस्म की जरूरत-4

“रेणुका तेज़ क़दमों के साथ दरवाज़े से बाहर चली गईं… मैं उनके पीछे पीछे दरवाज़े तक आया और उन्हें अपने खुद के घर में घुसने तक देखता ही रहा।

मैं... [Continue Reading] ...”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)
Posted: Tuesday, October 14th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: जिस्म की जरूरत-4

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

जिस्म की जरूरत-4

रेणुका तेज़ क़दमों के साथ दरवाज़े से बाहर चली गईं…
मैं उनके पीछे पीछे दरवाज़े तक आया और उन्हें अपने खुद के घर में घुसने तक देखता ही रहा।

मैं झट से अपने घर में घुसा और बाथरूम में जाकर अपन लंड निकाल कर मुठ मारने लगा।
बस थोड़ी ही देर में लंड ने ढेर सारा माल बाहर उगल दिया…
मेरा बदन अचानक से एकदम ढीला पड़ गया और मैंने चैन की सांस ली।

मैं बहुत ही तरो ताज़ा महसूस करने लगा और फटाफट तैयार होकर अपने ऑफिस को चल दिया।

जाते जाते मैंने एक नज़र रेणुका भाभी के घर की तरफ देखा पर कोई दिखा नहीं।

मैं थोड़ा मायूस हुआ और ऑफिस पहुच गया।

ऑफिस में सारा दिन बस सुबह का वो नज़ारा मेरी आँखों पे छाया रहा.. रेणुका जी के हसीं उत्तेज़क चूचियों की झलक… उनकी गांड की दरारों में फंसा उनका गाउन… उनके शर्म से लाल हुए गाल और उनकी शर्माती आँखें… बस चारों तरफ वो ही वो नज़र आ रही थीं।

इधर मेरा लंड भी उन्हें सोच सोच कर आँसू बहाता रहा और मुझे दो बार अपने केबिन में ही मुठ मारनी पड़ी।

किसी तरह दिन बीता और मैं भागता हुआ घर की तरफ आया… घर के बाहर ही मुझे मेरी

बेचैनी का इलाज़ नज़र आ गया।

घर के ठीक बाहर मैंने एक गोलगप्पे वाले का ठेला देखा और उस ठेले के पास रेणुका अपनी बेटी वन्दना के साथ गोलगप्पे का मज़ा ले रही थीं।

मुझे देखकर दोनों मुस्कुरा उठीं।
मैंने भी प्रतिउत्तर में मुस्कुरा कर उन दोनों का अभिवादन किया।

'आइये समीर जी... आप भी गोलगप्पे खाइए... हमारे यहाँ के गोलगप्पे खाकर आप दिल्ली के सारे गोलगप्पे भूल जायेंगे... '
मेरी उम्मीदों के विपरीत ये आवाज़ वन्दना की थी जो शरारती हसीं के साथ मुझे गोलगप्पे खाने को बुला रही थी।

मैं थोड़ा चौंक गया और एक बार रेणुका जी की तरफ देखा.. मुझसे नज़रें मिलते ही वो फिर से सुबह की तरह शरमा गईं और नीचे देखने लगीं, फिर थोड़ी ही देर बाद कनखियों से मेरी तरफ देख कर मुस्कुराने लगीं...

उनकी इस अदा ने मुझे घायल सा कर दिया और मैं अन्दर ही अन्दर गुदगुदी से भर गया। लेकिन जल्दी ही रेणुका जी की तरफ से अपनी नज़रें हटा कर वन्दना की तरफ देख कर मुस्कुराने लगा।

'अच्छा जी... आपके यहाँ के गोलगप्पे इतने स्वादिष्ट हैं जो मुझे दिल्ली के गोलगप्पे भुला देंगे... ?' मैंने भी उसे जवाब दिया और उनकी तरफ बढ़ गया।

ठेले के करीब जाकर मैं उन दोनों के सामने खड़ा हो गया और गोलगप्पे वाले से एक प्लेट लेकर गोलगप्पे खाने को तैयार हो गया।

‘भैया इन्हें बड़े बड़े और गोल गोल खिलाना… ये हमारे शहर में मेहमान हैं तो इनकी खातिरदारी में कोई कमी न रह जाये।’ वन्दना ने मेरी आँखों में एक टक देखते हुए शरारती मुस्कान के साथ गोलगप्पे वाले को कहा।

मैं उसकी बातों से फिर से चौंक गया और उसकी बातों तथा उसके इशारों को किसी दो अर्थी बातों की तरह समझने लगा।
मैं थोड़ा कंफ्यूज हुआ और फिर एक चांस मारने के हिसाब से बरबस बोल पड़ा- गोल गोल तो ठीक हैं लेकिन ज्यादा बड़े मुझे पसंद नहीं हैं… इतने बड़े ही ठीक हैं जो एक ही बार में पूरा मुँह में आ जाये और पूरा मज़ा दे…

मेरी बातें सुनकर दोनों माँ बेटियों ने एक साथ मेरी आँखों में देखा… मैं एक बार रेणुका जी की तरफ देखता तो एक बार वन्दना की आँखों में…

रेणुका जी के गाल फिर से वैसे ही लाल हो गए थे जैसे सुबह हुए थे और वन्दना की आँखों में एक चमक आ गई थी जैसे किसी जवान कमसिन लड़की की आँखों में वासना भरी बातों के बारे में सुन कर आ जाती है।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि किसे देखूं और किसके साथ चांस मारूँ।
एक तरफ माँ थी जो की बाला की खूबसूरत और चोदने के लिए बिल्कुल सही माल थी, वहीं दूसरी तरफ एक कमसिन जवान लड़की…

मेरे लंड ने खुशी से सर उठाना शुरू कर दिया।
मैं मुस्कुराते हुए उन दोनों को लाइन देने लगा और गोलगप्पे खाने लगा।

थोड़ी ही देर में हमने हंसी मजाक के साथ गोलगप्पे खाए और फिर एक दूसरे को वासना और झिझक भरी निगाहों के साथ अलविदा कह कर अपने अपने घरों में घुस गए।

रात को अब फिर से नींद नहीं आई और इस बार मैं दोनों के बारे में सोच सोच कर उनके सपने देखते हुए अपने दिल को समझाने लगा कि जल्दी ही दोनों में से किसी न किसी की चूत चोदने का मौका जरूर मिलेगा।

अगली सुबह मेरी आँख फिर से देर से खुली… घडी की तरफ देखा तो फिर से नौ बज चुके थे।
दौड़ता हुआ बाथरूम में घुसा और फटाफट फ्रेश होने लगा।

अचानक से मेरे दिमाग में दूध का ख्याल आया और बरबस ही चेहरे पे एक मुस्कान आ गई…
कल सुबह के हालात मेरी आँखों के सामने किसी फिल्म की तरह चलने लगे।
मैं यह सोच कर खुश हो गया कि आज भी मेरे देरी से उठने की वजह से रेणुका जी ने दूध ले लिया होगा और कल की तरह आज भी वो दूध देने जरूर आएँगी।
इस ख्याल से ही मेरे लंड ने तुनक कर अपनी खुशी का इजहार किया और मेरा हाथ खुद ब खुद वहाँ पहुँच गया।

मैं जल्दी से नहा धोकर निकला और बस एक छोटे से निकर में अपने घर के दरवाज़े की ओर टकटकी लगाये ऑफिस जाने की बाकी तैयारियों में लग गया।

मेरी आँखें बार बार दरवाज़े की तरफ देखतीं मानो बस रेणुका जी अपने गाउन में अपनी उन्नत चूचियों को समेटे अपनी कमर मटकाते हुए अन्दर दाखिल होंगी और मेरे दिल को उनकी सुन्दर काया के दर्शन करके आराम मिलेगा।

लेकिन काफी देर हो गई और कोई भी आहट सुनाई नहीं पड़ी।

मैं मायूस होकर अपने ऑफिस के लिए कपड़े पहनकर तैयार हो गया और अपने दरवाज़े की

तरफ बढ़ा।
मैं अपने मन को समझा चुका था कि कोई नहीं आनेवाला…

बुझे मन से दरवाज़ा खोला और बस ठिठक कर खड़ा रह गया… सामने वन्दना अपने हाथों में एक बर्तन लिए खड़ी थी जिसमें शायद दूध था।

एक पल को मैं चुप सा हो गया… कुछ बोल ही नहीं पा रहा था मैं!

'समीर जी… यह रहा आपका दूध… शायद आप सो रहे थे तभी दूधवाले ने हमारे घर पर दे दिया।' वन्दना ने मुस्कुराते हुए मेरी आँखों में देखकर कहा।

मैं तो बस उलझन में खड़ा उसकी बातें सुनता रहा और सच कहें तो कुछ सुन भी नहीं पाया… मैं उस वक़्त उसकी माँ का इंतज़ार कर रहा था और उसकी जगह वन्दना को देख कर थोड़ी देर के लिए 'क्या करूँ क्या न करूँ' वाली स्थिति में जड़वत खड़ा ही रहा।

'कहाँ खो गए जनाब… हमें ड्यूटी पे लगा ही दिया है तो अब कम से कम यह दूध तो ले लीजिये।' उसने शरारती अंदाज़ में शिकायत करते हुए कहा।

'माफ़ कीजियेगा… दरअसल कल रात कुछ ज्यादा काम करना पड़ा ऑफिस का इसलिए देर से सोया…' मैंने झेंपते हुए उससे माफ़ी मांगी और दूध का बर्तन उसके हाथों से ले लिया।

यूँ तो मेरी आँखों पे उसकी माँ रेणुका का नशा छाया हुआ था लेकिन दूध का बर्तन लेते वक़्त मेरी नज़र वन्दना के शरीर पर दौड़ गई और मैंने नज़रें भर कर उसे ऊपर से नीचे देखा।
हल्के आसमानी रंग की टॉप और गहरे भूरे रंग के छोटे से स्कर्ट में उसकी जवानी उफान मर रही थी।

टॉप के नाम पर एक रेशमी कपड़ों से बना कुरता था जिसमे से उसकी ब्रा की लाइन साफ़ दिख रही थी। उसकी 32 साइज़ की गोल गोल चूचियों की पूरी गोलाइयाँ उस रेशमी कुरते के अन्दर से एक मौन निमंत्रण सा दे रही थीं।

मेरी नज़र तो मानो अटक ही गई थीं उन कोमल उभारों पे।
कसम से मुझे अपनी दिल्ली वाली पड़ोसन नेहा की याद आ गई।
बिल्कुल वैसी ही चूचियाँ… वैसी ही बनावट… !!

'आपने कुछ खाया पिया भी है या ऐसे ही चल दिए ऑफिस ?' वन्दना ने अचानक मेरा ध्यान तोड़ते हुए पूछा।

'हाँ जी… मैंने खा लिया है।' मैंने भी मुस्कुरा कर जवाब दिया।

'कब खाया और क्या खाया… आप तो इतनी देर तक सो रहे थे और दूध भी हमारे घर पर पड़ा था तो खाया कब… ?' एक जासूस की तरह वन्दना ने मेरा झूठ पकड़ लिया और ऐसे देखने लगी मानो मैंने कोई डाका डाल दिया हो।

'वो..वो … कुछ बिस्किट्स पड़े थे वो खा लिए हैं… ऑफिस में देर हो रही थी…' मैंने पकड़े गए मुजरिम की तरह सफाई देते हुए कहा और मुस्कुराने लगा।

'हमें पता था… चलिए, माँ ने आपको नाश्ते के लिए बुलाया है… उन्हें पता था कि आप ऐसी ही कोई हरकत करेंगे।' वन्दना ने बिल्कुल आदेश देने वाले अंदाज़ में कहा और मुझे बड़ी बड़ी आँखें दिखाने लगी।

मैंने जैसे ही यह सुना कि रेणुका जी ने ही उसे यहाँ भेजा है वो भी मुझे बुलाने के लिए तो मानो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

मेरे चेहरे पे एक चमक आ गई और मेरा मन करने लगा कि मैं दौड़कर अभी रेणुका की पास पहुँच जाऊँ लेकिन तहज़ीब भी कोई चीज़ होती है…
मैंने झूठमूठ ही वन्दना से कहा- मुझे बहुत देरी हो जायेगी ऑफिस पहुँचने में ! आज रहने दीजिये… फिर कभी आ जाऊँगा।
मैंने बहाना बनाते हुए कहा।

‘जी नहीं… यह हमारी मम्मी का हुक्म है और उनकी बात कोई नहीं टाल सकता… तो जल्दी से दूध का बर्तन अन्दर रख दीजिये और हमारे साथ चलिए, वरना अगर मम्मी नाराज़ हो गईं तो फिर बहुत बुरा होगा।’ वन्दना ने मुझे डराते हुए कहा।

मैं तो खुद ही उसकी मम्मी से मिलने को तड़प रहा था लेकिन मैंने उसके सामने थोड़ा सा नाटक किया और फिर दूध का बर्तन अपनी रसोई में रख कर उसके साथ चल पड़ा।

मैंने एक बात नोटिस की कि रेणुका जी का नाम सुनते ही मेरी नज़र वन्दना की जवानी को भूल गई और उसकी मदमस्त चूचियों को इतने पास होते हुए भी बिना उनकी तरफ ध्यान दिए हुए रेणुका जी से मिलने की चाहत लिए उसके घर की तरफ चल पड़ा।

शायद रेणुका जी के गदराये बदन की कशिश ही ऐसी थी कि मैं सब भूल गया।
कहानी जारी रहेगी।
आप अपने विचार भेज सकते हैं।